रात्रिक्लास 2.4.68 ओमशान्ति। मनमनाभव

रॉयल स्टूडेन्ट। नशा रहता है ना बच्चों को; क्योंकि रॉयल स्टूडेन्ट हो। बेहद का मालिक पढ़ा रहे हैं तो तुम कितने रॉयल स्टूडेन्ट हो। तो फिर रॉयल स्टूडेन्ट की फिर रॉयल चलन भी चाहिए। तब बाप का शो भी कर सकें। विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हो। निमित्त बने हो श्रीमत पर। तो कितनी शान्ति की प्राइज़ मिलती है। प्राइज़ भी एक जन्म के लिए थोड़े ही है। जन्म–जन्मांतर के लिए मिलती है। बच्चे बाप की शुक्रिया क्या मनावेंगे? बाप आपे ही आकर वस्तु हाथ में देते हैं। बच्चों को पता था क्सा कि बाप आकर यह देंगे? बाप कहते हैं मुझे याद करो और पवित्र बनो। बाप कब ऐसे रिक्वेसट नहीं करते हैं कि मुझे याद करो। बाप क्यों कहते हैं? क्योंकि इस याद से विकर्म विनाश होनी है। सिर्फ बेहद के बाप की पहचान मिली और निश्चय हो। तकलीफ़ की बात ही नहीं। भक्तिमार्ग में बाबा–2 कहते रहते हैं। ज़रूर बाप से कुछ वर्सा मिलेगा । राजाई है।

2.4.68 2

इसलिए पुरुषार्थ की मार्ज़िन भी है। जितना श्रीमत पर पुरुषार्थ करेंगे। बाप, टीचर, गुरू तीनों की श्रीमत मिलती है। इसकी मत पर चना(चलना) है। रहना भी अपने घर में है। मत पर चलने में कुछ विघ्न पड़ती है, सहन करना पड़ता है। वह भी बाप बता देते हैं। कौन–सी–2 माया के विघ्न पड़ते हैं! देहअभिमान के कारण वह भी जानते हो। माया का पहला नम्बर का विघ्न कौन सा है? (देहअभिमान)। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। क्यों नहीं श्रीमत को मानते हो? बच्चे कहते हैं हम कोशिश तो करते हैं; परन्तु माया करने नहीं देती। बच्चे समझते हैं पढ़ाई में पुरुषार्थ ख़ास ज़रूरी है। उनको अगर मददगार मिले सर्विस लिए तो अच्छा है। मेहनत भी सभी कर रहे हैं। कुछ न कुछ कोशिश करते हैं। जितनी बुद्धि है उतनी कोशिश करते हैं। पुरुषार्थ बिगर कोई रह न सके। सभी यही पुरुषार्थ करते हैं कि हम बाप से ऊँच वर्सा लेवें। और क्या पुरुषार्थ करेंगे? कांटे से फूल बनने के लिए याद की बहुत ज़रूरत है। कांटे हैं 5 विकारों के। वह निकल जायें तो फूल बन जावेंगे। यह निकलेंगे योगबल से। कोई बच्चे सोचते हैं फलाना गया, फलाना गया। शायद जल्दी हम लोगों को भी जाना पड़े। जबकि ऐसे–2 सुनते हैं। ख़याल भी न था कि यह जावेगा। तो जब ऐसी हालत है तो पुरुषार्थ करना चाहिए। मरें तो वही शिवबाबा की याद हो और वसीकरण मंत्र भी याद हो। और कुछ भी याद न हो सिवाय बाप के। तब प्राण तन से निकलें। बाबा आये कि आये। आये कि आये। ऐसे बाबा को याद करने से भी कचड़ा जल जाता है। आत्मा में ही कचड़ा है। आत्मा में है तो शरीर में भी कहेंगे। जन्म–जन्मांतर का कचड़ा है, वह जलना है। जब तुम्हारा कचड़ा जल जाये तो दुनियां भी साफ हो जाये। सारा कचड़ा निकल जाये तुम्हारे लिए। सभी बहनों और भाईयों को कचड़ा साफ करना है श्रीमत देकर। सिर्फ अपना कचड़ा नहीं साफ करना है। एक बाप को बुलाते हैं कि आकर बाबा दुनियां से कचड़ा साफ करो। बाबा आकर इस विश्व को पवित्र बनाते हैं। किसके लिए? हमारे लिए। इस पवित्र दुनियां में तो तुम ही पहले राज्य करने आते हो। तो खस(खास) तुम्हारे लिए तुम्हारे देश में आते हैं। भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग में फ़र्क़ बहुत है। कितने अच्छी–2 गीत हैं ; परन्तु समझा जाता है गीत गाते हैं; परन्तु कल्याण तो किसका कर नहीं सकती गीत। कल्याण तो है अपने स्वधर्म में टिकने में। स्वधर्म में टिकने और बाप को याद करने में ही कल्याण है। तुम्हारा याद करना ऐसा ही है जैसे लाइट हाऊस फिरता है। स्वदर्शन चक्र को ही लाइट हाऊस कहा जाता है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। नमस्ते।